(3) Dr. Sangita Aher (Hindi)

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

अ

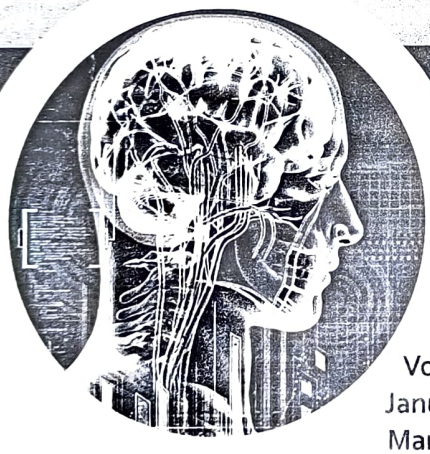

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi / Hindi Part - I

Ajanta Prakashan

IMPACT FACTOR /
INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृती : वैश्विक परिदृश्य **भाग्यश्री बिरंगणे कोष्टी**	१-३
२	काशी का अस्सी उपन्यास में सामाजिक यथार्थ की दिशा **डॉ. दुर्गा प्रसाद सिंह**	४-८
३	दुष्यन्तकुमार की गजलों में आम आदमी **प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव**	९-१२
४	शिव और संगीत **डॉ. अश्विनीकुमार सिंह**	१३-१६
५	विश्व राजनीति में ब्रिक्स के बढते कदम **दीपक कुमार**	१७-२३
६	भारतीय मीडिया का इतिहास **गौतम कुमार**	२४-३०
७	भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा दयानंद सरस्वती **ललन कुमार**	३१-३४
८	मराठी के दलित आत्मकथात्मक उपन्यासों का इतिहास **प्रा. डॉ. शेख मोहसीन रशीद**	३५-३८
९	बिहार में मुसहर की स्थिती **डॉ. अजीत कुमार**	३९-४१
१०	नारी अस्मिता एवं संघर्ष गाथा व्यक्त करता है 'सुरेखा पर्व 'लघुउपन्यास'' **डॉ. के. डी. बागुल**	४२-४५
११	भाषा और संस्कृति : डॉ. विनोद बब्बर **पूनम सत्यनारायण शर्मा** **डॉ. सौ. अरुणा राजेंद्र शुक्ल**	४६-४८
१२	भारतीय संस्कृति और मानवतावाद **डॉ. प्रीति राठौड**	४९-५४
१३	सूर्य नमस्कार : व्यक्तित्व और शिक्षा **उर्मिला**	५५-५८

३. दुष्यन्तकुमार की गजलों में आम आदमी

प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव
हिंदी विभागाध्यक्ष, महिला महाविद्यालय, गेवराई, जि. बीड.

गजल काव्य का लोकप्रिय रूप है| मूलत: यह अरबी भाषा का शब्द है| फारसी साहित्यकारों के भारत आगमन से गजल फारसी से हिन्दी में आयी है और अमीर खुसरों इसके प्रवर्तक माने जाते हैं| खुसरो से प्रेरणा लेकर हिन्दी साहित्य में गजल की दीर्घ परम्परा चलती रही| अमीर खुसरों के बाद कबीर से लेकर आधुनिक युग में भारतेन्दु, निराला, शमशेर, नीरज, कुँअर बेचैन, जहीर कुरैशी, चंद्रसेन विराट, देवदास, बिसमिल तथा दुष्यन्तकुमार आदि अनेक गजलकारों ने हिन्दी गजल की परम्परा को समृध्द बनाया|

साठोत्तरी काल में हिन्दी गजलकार समसामायिक प्रवाह के साथ समाज और उसकी वास्तवता के परिप्रेक्ष्य में कलम उठाकर प्रतिनिधित्व करता है| इसने यथार्थ से आँख नहीं चुरायी बल्कि खुली आँखों से यथार्थ को अनुभव किया ओर गजलों के माध्यम से इसे बेझिझक अभिव्यक्त भी किया | जनता का हिमायती और प्रतिनिधि बनकर वह गजल लिखता है| सामाजिक यथार्थवाद को चित्रित करना उनकी गजलों का प्रमुख उद्देश रहा है|

साठोत्तरी काल के अनन्तर परिवेश से हिन्दी गजलकार प्रभावित हुआ| अब गजल में केवल प्रेम निरूपण ही नहीं रहा बल्कि सामाजिक, राजनीतिक परिस्थिति, आर्थिक विसंगति और वास्तविकता को गतलकोरों ने अपनी गजलों का प्रमुख विषय बनाया| प्रेम के विशिष्ट कटघरे से निकलकर गजल सामाजिक दायित्वबोध को लेकर आगे गढी| इसमें अहं भूमिका निभायी है दुष्यतन्तुकमार ने| "उनकी गजलों में स्वातंत्र्य, संविधान, प्रजांतत्र, व्यवस्था, वास्तव, भ्रष्टाचार, विषमता, आम आदमी, वेदना, बुध्दिजीवी की दायित्वहीनता, रचनाकार के दायित्व, दमन, भय-निराशा, साहित्यिक उपादेयता, संघर्ष, जनता, जीवन, जीवंतता, भविष्य के प्रति आस्था और विश्वास, देश, देशप्रेम, युध्द, मूल्य, और प्रेम आदि को परिप्रेक्ष्य में आँका हुआ है|"

जीवन के अनेक पहलुओं पर दुष्यन्तकुमार ने गजलें लिखी है| पारम्पारिक गजल के दायरों को तोडकर सामाजिक यथार्थ को केन्द्र में रखकर उन्होंने लिखा है| इससे सम्बन्धित सारे भाव उनकी गजलों में आये हैं इन्हीं में से एक है 'आम आदमी'| जनता के पक्षधर होने के कारण साधारण जनता की चेतना पर बडी ही सजगता से लिखा है| उनका आम आदमी से जुडा रहना इसके बारे में वे स्वंय लिखते हैं, "मैं एक साधारण आदमी हूँ और इतिहास और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में साधारण आदमी की पीडा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और उसके सम्बन्धों के उलझावों को जीता और व्यक्त करता हूँ|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें अनेक भावों से परिपूर्ण और गहराई से युक्त है| रोजमर्रा की जीवनानुभूति को बडी ही सजगता के साथ अपनी गजलों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है| समसामायिक गजल परम्परा में दुष्यन्तकुमार के आगमन से एक नवीन प्रवाह आया है| इसमें अनेक भावों और विचारों के प्रवाह में आम आदमी और उसकी पीडा को जुबान मिली है| जितनी सक्षमता

से दुष्यन्तकुमार की गजलों में राजनीतिक और सामाजिक विषमता का चित्रण हुआ है उतनी ही सशक्तता से आम आदमी और उसका यथार्थ उभरकर आया है| रचनाकार के दायित्व का पूरी ईमानदारी से निर्वाह करते हुए वास्तव अनुभूति पर दुष्यन्तकुमार लिखते हैं| पूरी निष्ठा के साथ वे सामान्य जनता से एकरूप हुए हैं|

"मैं जिसे ओढता-बिछता हूँ,
वो गजल आपको सुनाता हूँ|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें आम आदमी की पीडा से जुड गयी है और यथार्थता की हिमायती बनी है| ये गजलें जन-वेदना की प्रस्तुति वास्तव के धरातल करती हैं| आस-पास के परिवेश की वेदना तथा पीडा के प्रति कवि आस्था रखते हैं|

सामाजिक और राजनीतिक विसंगति का शिकार भी आम आदमी ही होता है| अनेक दिवारें उसके सामने खडी की जाती है, जिसें लाँघकर जाना उसके लिए संभव नहीं हो पाता है| उसकी दैन्यावस्था, घुटन और छटपटाहट को कवि अभिव्यक्ति देते हैं|

"दिवारें होती है,
और लोग आए...दिन उनसे टकराते हैं,
बुरी तरह घायल हो जाते हैं,
कई बार गति बिलमा जाती है
रस्ते खो जाते है
बरसों तक रक्त-रंगे माथों पर
पट्टीयाँ जमाते है|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें हिन्दी गजलों में 'मील का पत्थर' हुई | इसमें आम आदमी के दु:ख-दर्द को जुबान मिली है| सामाजिक चिंतन उनकी गजल का प्रमुख विषय रहा है| समाज की पीडा और वेदना के सूक्ष्म यथार्थ का सक्षम चित्रण गजलों में हुआ है| समसामायिक परिस्थितियों में आम आदमी की फटेहाली का कारण वे समकालीन राजनीतिक अव्यवस्था को मानते हैं| व्यवस्था में परिवर्तन करने के लिए जन-चेतना को जागृत करते हैं| जब आम आदमी व्यवस्था के विरोध में आवाज नहीं उठाता तब तक उसकी परिस्थिती में सुधार नहीं आयेगा| "हर सडक पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में, हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए |"

गजल के क्षेत्र में आम आदमी का हिमायती बनकर और उसकी रोजी-रोटी की वकालत करने की दुष्यन्तकुमार की कोशिश जनमानस में चेतना प्रस्फुटित करती है| आम आदमी की स्थिति बदलने के लिए कवि परिवर्तन चाहते हैं| केवल हंगामा खडा करना उनका उद्देश्य नहीं है, बल्कि सूरत बदलने के लिए की गई कोशिश है| राजनीति में फैला आतंकवाद, भ्रष्टाचार , अव्यवस्था, धोखाधडी इसमें जब तक परिवर्तन नहीं होता तब तक आम आदमी सुखी नहीं हो सकता| वह तो केवल सुख की

कामना करता हुआ जीवन बिताता है| उसके लिए तो सुख एक स्वप्न है, जिसके पीछे वह भागता है और दु:ख की खाई में जा गिरता है| उसकी छटपटाहट को अभिव्यक्त करते हुए दुष्यन्तकुमार लिखते हैं,

"खडे हुए थे अलावों की आँच लेने को,
सब अपनी-अपनी हथेली जलाके बैठ गए|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें भाव-संप्रेषण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है| इनमें सामाजिक और यथार्थ का हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है| इनमें सामाजिक यथार्थता और दीनता को अत्यन्त सक्षमता के साथ अभिव्यक्त किया गया है|

समाज की सूक्ष्मातिसूक्ष्म चीजें दुष्यन्तकुमार की आँखों से छूटी नहीं है| आधुनिक युग में टूटते मूल्यों की समस्या गंभीर हो रही है| इसकी चिंता को भी दुष्यन्तकुमार उजागर करते हैं| पारिवारिक संबंधों पर इसका असर हुआ और फिर इसका शिकार हुआ आम आदमी| इन समस्याओं से लोगों का मन और शरीर घायल हो रहा है| उसकी इसमें घुटने हो रही है और वह तडप रहा है| उसकी तडप और छटपटाहट पुर दुष्यन्तकुमार लिखतें हैं,

"दु:ख को बहुत सहज के रखना पडा हमें,
सुख तो किसी कपूर की टिकिया-सा उड गया|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के बीच पीस रहे आम आदमी के अंतरिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं| क्योंकि हमारे समाज में आम आदमी की फटेहाली का कोई समाधान नहीं है| उसका तो पूरा जीवन दो वक्त की रोटी, कपडा और रहने के लिए बसेरा ढूँढने में निकल जाता है|

दुष्यन्तकुमार अपने सामाजिक दायित्व को पुरी तरह निभाते हैं| इस देश का आम आदमी स्वतंत्रता का सपना देखता हुआ हँसते हुए बलिवेदी पर चढा| परंतु आजादी के बाद खोखली राजनीति का शिकार भी वह बन गया|

"दुकानदार तो मेले में लुट गए यारो|
तमाशबीन दुकानें लगाके बैठ गए|"

साधारण आदमी की निरीहता, विवशता तथा सहनशीलता की परिसीमा देखकर कवि का मन व्यथित होता है| उनपर हो रहे अन्याय की कोई सीमा नहीं हैं| फिर भी वह अपनी वेदना और समस्या की अभिव्यक्ति नहीं कर पाता है| परन्तु उनकी मूक संवेदना को दुष्यन्तकुमार अभिव्यक्ति देते हैं| उसकी जीवन त्रासदी का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं,

"उफ नहीं की उजड गए
लोग सचमुच गरीब हैं|"

कोई भी रचनाकार समसामायिक परिस्थितियों को अनदेखा नहीं कर सकता| अपने परिवेश से प्रभावित होकर दुष्यन्तकुमार संघर्ष करते हैं| जन चेतना के संवाहक रूप में वे अपनी गजलों में अभिव्यक्ति देते हैं| सामान्य जनता के पक्षधर होने के कारण उनके साथ की प्रतिबध्दता को वो भूलते नहीं है,

"मुझे में रहते हैं,

करोडों लोग चुप कैसे रहूँ

हर गजल सल्तनत के नाम एक बयान है|"

जीवन की समग्रता और जटिलता को उन्होंने अपनी गजलों का प्रमुख विषय बनाया| प्रगतिशील जनवादी विचारधारा को लेकर उनकी गजलें हिन्दी में प्रविष्ट हुई है| आम आदमी का दु:ख, वेदना, कुण्ठा, निराशा, विवशता, निरीहता आदि पर तो दुष्यन्त ने लिखा ही है, परन्तु उनमें आम आदमी की विद्रोह तथा क्रांति का स्वर भी उसी दृढता से मुखर हुआ है| आम आदमी की पीडा मिटाने के लिए गजलकार परिवर्तन और क्रांति में विश्वास करता है|

"हो गयी है परी पर्वत सी पिघलनी चाहिए

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए|"

दुष्यन्तकुमार की गजलें रूमानियत की परम्परा से हटकर सीधे आम आदमी के दिल और दिमाग से जुड जाती हैं| यह कथन बिल्कुल ठीक लगता है, "दुष्यन्त ने हुस्नों-इश्क और विरह-मिलन को दुनिया से गजल को बाहर निकालकर उसे आम-आदमी के दुखदर्द से जोड दिया|"

निष्कर्षत

हम कह सकते है कि दुष्यन्तकुमार स्वातंत्र्योत्तर काल के सशक्त गजलकार के रूप में हमारे सामने आते हैं| साठोत्तरी काल के जन-जीवन की वास्तविक अभिव्यक्ति उनकी गजलों में हुई है| राजनीतिक और सामाजिक अव्यवस्था के साथ-साथ टूटते मूल्य और आम आदमी के दर्द को उनकी गजलें विशेष रूप से अभिव्यक्त करती हैं|

संदर्भ-सूची

1) रचनाकार दुष्यन्तकुमार-डॉ.किशोर

2) साये में धूप-दुष्यन्तकुमार

3) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. माधव सोनटक्के

4) हिछी के प्रगतिशील और समकालीन कवि-डॉ. रणजीत

५) हिन्दी साहित्य आलोचना एवं अनुसंधान-डॉ. विजय चन्द्र